वन उत्पादकता संस्थान

(भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून)

पूर्वी क्षेत्रीय जवाहर नवोदय विद्यालय संगठन का विज्ञान कांग्रेस के तहत शिक्षको एवं विद्यार्थियों का संस्थान भ्रमण

दिनांक
24.11.2022

वन उत्पादकता संस्थान, रांची क़े निदेशक डा. नितिन कुलकर्णी एवं जवाहर नवोदय विद्यालय, मेसरा, रांची के प्राचार्य श्री ए.के.झा के आपसी समन्वय से दिनांक 24.11.2022 को पूर्वी क्षेत्रीय नवोदय विद्यालय संगठन के तीन राज्यों झारखंड, बिहार एवं पश्चिम बंगाल से एक प्राचार्य, एक उप-प्राचार्य, 21 शिक्षकों एवं 96 विद्यार्थियों द्वारा संस्थान का भ्रमण किया गया जिसमे संस्थान के विभिन्न वानिकी गतिविधियों की जानकारी प्राप्त कर लाभांवित हुए।

संस्थान के उप-वन संरक्षक, श्रीमती अंजना सुचिता तिर्की द्वारा स्वागत एवं संस्थान का संक्षिप्त परिचय के बाद निदेशक डा. नितिन कुलकर्णी ने अपने संबोधन में वानिकी की आवश्यकता, पर्यावरणीय मुद्दे, विद्यार्थियों एवं शिक्षकों का पर्यावरण सुधार में वांछित योगदान की चर्चा करते हुए बताया कि आज, बंगाल, बिहार एवं झारखंड के नवोदय विद्यालय के शिक्षकों की अगुआई में विद्यालय के अव्वल छात्र-छात्राओं द्वारा संस्थान का भ्रमण संस्थान के लिए गौरव की बात है क्योंकि वन उत्पादकता संस्थान, रांची भी वानिकी अनुसंधान के लिए इन्ही तीनों राज्यों का प्रतिनिधित्व कराता है। उन्होने संस्थान एवं भारतीय वानिकी एवं शिक्षा परिषद की संक्षिप्त शासनादेश की जानकारी देते हुए पर्यावरणीय घटनाक्रम को विस्तार से बताया। जलवायु परिवर्तन, कोविड का पर्यावरण से संबंध, वैश्विक तापन, बाढ़, भूस्खलन आदि के मूल कारक मानवीय गतिविधियों को बताया। मैं व्यक्तिगत रुप से भी काफी उत्साहित हूं कि तीनों राज्यों के नवोदय विद्यालय के अव्वल बच्चे वानिकी, पर्यावरणीय, जलवायु परिवर्तन के विषय में जानकारी प्राप्त करेंगे जो कि देश के भविष्य हैं। मैं इनसे आग्रह करूंगा कि पर्यावरणीय सुधार के लिए दूसरों को भी प्रेरित करें। मानवीयकृत पर्यावरण प्रदूषण को मानव द्वारा हीं सुधारा जा सकता है और यह सम्भव है बशर्ते आप दृढ़ संकल्पित हैं। पर्यावरण सुरक्षित रखते हुए विकास की अवधारणा विकसित करनी होगी। मैन आशावान हूं कि आपका भ्रमण सफल होगा और आप पर्यावरण के संदेशों को दूर तक सेवाहित करेंगे।

पूर्वी क्षेत्रीय जवाहर नवोदय विद्यालय संगठन का विज्ञान कांग्रेस के तहत शिक्षको एवं विद्यार्थियों का संस्थान भ्रमण

संस्थान के समूह समन्वयक अनुसंधान एवं वैज्ञानिक – जी, डा. योगेश्वर मिश्रा ने अपने संबोधन में बताया कि आपके पूर्ववर्ती छात्रों ने भी इसी तरह का भ्रमण किया और हमें आपलोगों को पर्यावरणीय जागरुकता का संदेश देकर गौरवान्वित महशूस कर्ता हूं। कोविड की चर्चा करते हुए उन्होनें कहा कि पर्यावरन संरक्षण के प्रति कोविड नाई बड़ा संदेश दिया। यमुना जैसे काली बन चुकी नदी स्वच्छ कहो गयी थी। सर्वे आफ इंडिया की चर्चा करते हुए वनाच्छादन की अद्यतन जानकारी प्राप्त की जा सकती है। संसाधन को संरक्षित रखते हुए आयवर्धन के तरीकों को विस्तार से बताया। संस्थान द्वारा संचालित विभिन्न अनुसंधान गतिविधियों को बताते हुए fast growing प्रजाति के पौधरोपण को वरीयता देने की अपील की। उन्होने कहा कि मिट्टी की गुणवत्ता के आधार पर प्रजातियों का चयन करना चाहिए।

विभिन्न विद्यार्थियों द्वारा उठाये गये सवालों का निदेशक डा. नितिन कुलकर्णी, समूह समन्वयक अनुसंधान, डा. योगेश्वर मिश्रा एवं उप-वन संरक्षक श्रीमती अंजना सूचिता तिर्की ने सहज समाधान किया। निदेशक ने दीमक को मानव एवं प्रकृति का दोस्त बताया। डा. योगेश्वर मिश्रा चंदन के पेड़ लगाने के लिए एक अन्य सहायक प्रजाति साथ में लगाने का सुझाव दिया। श्रीमती अंजना सूचिता तिर्की ने वनाच्छादन से संबंधी सवालों का जवाब दिया।

श्री बी.डी.पंडित ने संस्थान द्वारा निर्धारित 7 गतिविधियों के लिए विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को सात दल में बाटकर क्रमश: सभी संसाधन प्रदर्शकों श्री रविशंकर प्रसाद, श्री सतीश कुमार, श्री राकेश कुमार सिन्हा, श्री सूरज कुमार, श्री करम सिंह मुंडा, श्री अतनु सरकार, श्री ललन कुमार, सुश्री अंशुप्रिया एवं श्री हरेराम साहु को क्रमश: बाँस वाटिका, मृदा परीक्षण प्रयोगशाला, जैविक खाद निर्माण, प्रौद्योगिकी प्रदर्शन सह व्याख्या केंद्र , बाँस पौधशाला, उत्तक संवर्धन प्रयोगशाला एवं आण्विक जीव विज्ञान प्रयोगशाला के गतिविधियों को विस्तार से समझाने वएवं दिखाने का सुझाव दिया। समस्त शिक्षक एवं विद्यार्थियों ने उपर्युक्त क्षेत्रों का भ्रमण किया एवं गतिविधियों का बारीकी साए अध्यन किया। आखिर में विभिन्न विद्यालय के विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने आज के कार्यक्रम का अपना अनुभव साझा किया एवं सफल ज्ञानवर्धक कार्यक्रम के लिए संस्थान को धन्यवाद दिया।

समापन सत्र में श्रीमती अंजना सुचिता तिर्की नाई प्रतिक्रिया प्राप्त करते हुए विद्यार्थियों को असैनिक सेवा एवं वन सेवा की प्रतियोगिता परीक्षाओं के लिए आवश्यक सुझाव दिया एवं वानिकी सवर्धन, पर्यावरण संरक्षण के विभिन्न उपायों को बताते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया एवं कार्यक्रम समापन की घोषणा की।

आयोजित कार्यक्रम सम्मलेन की झलकियां

वन उत्पादकता संस्थान, रांची